WLC15-1-1-HI

क्या परमेश्वर का अस्तित्व है? परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में बहस - प्रोग्राम 1

अनाऊंसर: आज द जॉन एन्करबर्ग शो में, क्या परमेश्वर अस्तित्व में है? हालही में किए गए प्यु सर्वे से प्रकट हुआ है, 5 में से 1 से भी ज्यादा अमरीकी अब खुद को नास्तिक समझते हैं/ एग्नोस्टीक या कोई खास नही समझते हैं, शायद आप खुद पूछ रहे हो, क्या परमेश्वर का अस्तित्व् है? कौनसे फिलोसोफिकल और साइंटिफिक बहस क्या हैं, जो दिखाए कि परमेश्वर का अस्तित्व है? आज मेरे मेहमान हैं, जो उन सवालों का जवाब देगे, एन्लिस्तिक्ल फिलोसोफर डॉक्टर विल्यम लेन क्रे, जिन्हें बहुत से लोगों ने हमारी पीढ़ी के विख्यात मसीही फिलोसोफर के रूप में जाना है, और इन्होने बहुत से विख्यात नास्तिक से बहस की है, जो संसार के विख्यात यूनिवर्सिटी से पढ़े हैं, डॉक्टर क्रे के पास फिलोसोफी में पी एच डी है, बरमिंगहम इंग्लैंड साथ ही डॉक्टर ऑफ़ थियोलोजी डिग्री, म्युनिक की यूनिवर्सिटी से, ये काम कर रहे हैं, फिलोसोफी के रिसर्च प्रोफेसर, तल्बुत स्कुल ऑफ़ थियोलोजी में, और ये संस्थापक हैं रिजनेबल फेथ डॉट ओर्ग के/ इन्होने 30 से भी ज्यादा किताबों को लिखा और एडिट किया है/ और फिलोसोफी और थियोलोजी के बारे में 100 से भी ज्यादा लेख लिखे हैं/ इनकी दो बहुत विखाय्त किताबे हैं, रिजनेबल फेथ, और ऑन गार्ड, आज हम इस सवाल से शुरू करेगे, परमेश्वर का अस्तित्व हो या नही इसके क्या फर्क पड़ता है?

लोग जो अपने कंधे सिकुडकर कहते हैं कि इससे क्या फर्क पड़ता है कि परमेश्वर का अस्तित्व है या नही, ये बताता है कि उन्होंने गहराई से नही सोचा है, इस सवाल के बारे में, यहाँ तक कि नास्तिक फिलोसोफर, जैसे कि फ्रेडरिच निचेड, बर्टेंड रसल, जॉन पॉल सार्ट, ये मानते हैं कि परमेश्वर का अस्तित्व मनुष्य के लिए बड़ा फर्क लेकर आता है/ समुह के रूप में और व्यक्तिगत रूप में/

अनाऊंसर: ये सुनने के लिए कि इससे क्या फर्क पड़ता है कि परमेश्वर अस्तित्व में है या नही, दूसरी बात परमेश्वर के अस्तित्व के लिए सबूत, हम आपको न्योता देते हैं कि विशेष प्रोग्राम में जुड़ जाए, द जॉन एन्करबर्ग शो में/

****

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: प्रोग्राम में स्वागत है, मैं हु जॉन एन्करबर्ग, और आज आपके लिए अद्भुत प्रोग्राम है, मेरे मेहमान हैं डॉक्टर विल्यम लेन क्रे, जो हमारे समय के सबसे अद्भुत फिलोसोफर हैं, ये विवादों में आते हैं, और चर्चा करते हैं बहुत ही विख्यात दोष निकालनेवालों के साथ में, आज हमारे इस संसार में और, जो संसार के बहुत ही सम्मानित यूनिवर्सिटीज से हैं, आप कल्पना कर सकते हैं कि ये किस तरह के दबाव की परिस्थित में रहे हैं, और अद्भुत काम किया है/

और डॉक्टर क्रे मैं खुश हूँ कि आज आप यहाँ हैं, मैं एक सवाल से शुरू करना चाहता हूँ, जो शादय बताए कि हमारे दर्शकों में से बहुत से लोग वो अभी खुद के बारे में क्या कह रहे हैं/ इससे क्या फर्क पड़ता है कि परमेश्वर अस्तित्व में है या नही? ये क्यों जरूरी है, बहुत से लोग कहते हैं, ये तो सच में उनके लिए कोई फर्क नही लाता है, कि परमेश्वर है या नही, और आप कहते हैं कि सबसे महत्वपूर्ण सवाल जिसका कोई जवाब दे सकता है, वो तो परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में सवाल है/ क्यों?

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: लोग जो अपने कंधे सिकुडकर कहते हैं कि इससे क्या फर्क पड़ता है कि परमेश्वर का अस्तित्व है या नही, ये बताता है कि उन्होंने गहराई से नही सोचा है, इस सवाल के बारे में, यहाँ तक कि नास्तिक फिलोसोफर, जैसे कि फ्रेडरिच निचेड, बर्टेंड रसल, जॉन पॉल सार्ट, ये मानते हैं कि परमेश्वर का अस्तित्व मनुष्य के लिए बड़ा फर्क लेकर आता है/ समुह के रूप में और व्यक्तिगत रूप में/ देखीए यदि परमेश्वर का अस्तिव नही होता, तो मनुष्य तो क इवल बायोलॉजिकल ओर्गानिस्म हैं, जैसे सब बायोलॉजिकल एलिमेंट मरने के लिए होते हैं, याने व्यक्तिगत और सामूहिक रूप में/

और इसलिए हम में से हरएक को इस बात को मानना होगा को थियोलोजीयन पॉल टीलिक कहते कहते हैं, व्यक्तित्व न होने की दहशत/ याने ये कहना कि मैं जानता हूँ कि मेरा अस्तित्व है/ मैं असली हूँ, जीवित हूँ/ मैं ये भी जानता हूँ कि किसी दिन मैं मर जाऊँगा, मेरा अस्तिव खत्म हो जाएगा/ मैं नही रहूँगा, और ये विचार स्थिर रहता है/

मुझे याद है जब मेरे पिता ने मुझे इस तरह से बताया कि किसी दिन मैं मर जाऊँगा, मैं तो भावनात्मक हो गया, इस बात से, और मैं बयान से बाहर दू:ख से भर गया/ और डर गया किसी तरह से बच्चे के रूप में, ये विचार कि

मेरा अस्तिव खत्म हो जाएगा, मैं मर जाऊँगा, ये मेरे सामने पहले नही था, और समय के साथ मैं जीने की कोशीश करने लगा कि ये अटल है जैसे हम करते हैं/

लेकिन मैं जॉन, पॉल सार्टी के प्रकाशन के बारे में सोच रहा था, कि ये सच है चाहे ये कुछ घंटों के लिए हो, या कुछ साल के लिए हो/ इससे कोई फर्क नही पड़ता, एक बार सारा अनंतकाल खोने के बाद में, और यदि कोई परमेश्वर नही है, तो हम अमरत्व के लिए सारी आशा खो बैठे हैं, हमारे पास केवल ये सिमित अस्तिव है, तो हम में से हरएक व्यक्तिगत रूप में, हमारा जीवन कब्र ए साथ खत्म होता है/ और ये केवल व्यक्तिगत रूप में हमारे लिए ही सत्य नही है/ लेकिन साथ ही सामूहिक रूप में मनुष्य जाती के लिए भी/

वैज्ञानिक हमें बताते हैं कि यूनिवर्स बढ़ते जा रहा है, और जैसे ये होता है, ये ठंडा और ठंडा होता है, और ठंडा होता है और अंत में, कोई ज्योति नही होगी, कोई गर्मी नही होगी/ कोई जीवन नही होगा, और केवल कंकाल होगे मरे हुए तारे और ग्रहों के, जो केवल बढ़ते हुआ अन्धकार ही होगा, और बाहरी स्पेस की जगह होगी,याने यदि कोई परमेश्वर नही है, तो मनुष्य तो अस्तिव में बारे में अंधकार में है, जैसे हम में से हर एक मनुष्य व्यक्तिगत रूप में, मृत्यु के लिए निश्चित है/ और इसका परिणाम ये होगा कि जीवन अपने आप में, खत्म होगा, हमारा जो जीवन में वो तो किसी अर्थ, उद्देश और कीमत के बिना होगा/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, इसके बारे में कहिए, ये अर्थ/ ये ऐसा क्यों है कि यदि परमेश्वर का अस्तिव नही है, तो हमारे जीवन के लिए कोई भी अर्थ नही रहता है?

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: मेरा अर्थ, तो महत्वपूर्ण है, क्यों किसी चीज का मायना है, और यदि परमेश्वर का अस्तिव नही है, तो फिर निश्चय ही,हमारा जीवन महत्वहिन है, इससे फर्क नही पड़ता, हम क्या करते हैं या हम क्या बनते हैं, अब शायद कोई कहे लेकिन, इस व्यक्ति ने इतिहास पर प्रभाव डाला है, या इसने और व्यक्ति पर प्रभाव डाला है/ और ये सब असल में इस जीवन के साथ संबंध रखते हैं, लेकिन केवल एक मात्र महत्व नही/ निश्चय ही, मनुष्य जाती, निश्चित हैं कि संसार की गर्मी के कारण मृत्यु को प्राप्त करे, तो सच में इससे कोई फर्क नही पड़ता है, कि हम क्या करते हैं या हम कौन हैं, क्योंकि सब कुछ एक जैसे ही खत्म होगे, तो वैज्ञानिकों का योगदान की मनुष्य का ज्ञान बढाए, और राजदूत का परिश्रम कि इस संसार में शान्ति लेकर आए, डॉक्टर के परिश्रम कि मनुष्य के दर्द और पीडाओं को दूर कर दे, ये सब अंत में बिलकुल शून्य हो जाएगे/ अंत में इससे कोई

फर्क नही आता है/ और इसलिए यदि परमेश्वर का अस्तित्व नही है, तो अवश्य ही हमारा जीवन बिना अर्थ और महत्व का है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: आपने ये भी कहा है कि यदि परमेश्वर का आस्तिव नही है तो जीवन का कोई मूल्य नही रहता है/ बताइए/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: मूल्य से मेरा अर्थ है अच्छा और बुरा/ सही या गलत है, और यहाँ दावा यही है कि कोई परमेश्वर नही है कि इस बात को निश्चित करे कि सही या गलत है या अच्छा या बुरा है/ तो नैतिक जीवन के लिए मुल्यु का विवरण भी नही रहता है/ नास्तिक विचारधारा में, सारे मूल्य तो केवल अकस्मात आते हैं, एवोलूशनरी प्रोसेस की, और सामजिक परिस्थिति की, लेकिन कोई बात नही है भेल और बुरे की, जैसे फ्रेंच एकसीनटलिस्ट जॉन पॉल सार्ट इसे कहते हैं कि हम तो केवल सामना करते हैं केवल बिना मूल्य के अस्तिव के बारे में, और कोई भी कहने के लिए नही हैं कि आप सही हैं और मैं गलत हूँ/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, आपने कहा है कि जीवन कब्र में खत्म होता है/ इससे कोई फर्क नही पड़ता है, लो चाहे आप स्टॅलिन जैसे जीए या मदर टेरीसा जैसे/ इसे बताइए/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: जी, फिर से यदि परमेश्वर अस्तिव में नही है तो अमरत्व की कोई आशा नही है, और इसलिए कोई नैतिक लेखे की जरूरत नही है, कि कैसे जीते हैं, चाहे नैतिक जीवन के लिए कोई बात हो, नास्तिकवाद में, तो वो खाली बातें ही हैं, क्योंकि स्टॅलिन और मदर टेरीसा का भविष्य एक ही जैसे होता/ इस संसार की गर्मी के कारण होनेवाली मृत्यु में/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, और आप के पास महान उदाहारण है, कि यदि हमारे पास में अमरत्व भी होता, तो भी परमेश्वर की जरूरत होती, आपके पास ये साइंस फ्रिक्शन का उदहारण है, इसके बारे में बताइए/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: जी, जब मैं छोटा था तो मैंने साइंस फ्रिक्शन की कहानी पढ़ी थी, कि एक एस्ट्रोनॉट एक खाली एस्ट्रोनोइट पर अकेले थे, बाहरी स्पेस में केवल अकेले थे, और उनके पास दो चीज़े थी, एक तो ज़हर था और दूसरा तो अमरत्व के लिए कोई दवा थी, और अपने अनुमान को देखकर, कि खोए हैं बाहरी स्पेस में, केवल खाली चट्टानों के बीच में, उन्होंने आत्महत्या करने का निर्णय लिया और उन्होंने ज़हर की दवा नीगल ली और फिर वो चौक गए, कि उन्होंने गलत दवा ले ली है/ उन्होंने अमरत्व की दवा को पी लिया था/ और इसलिए

वो अमरत्व में थे, अर्थहीन, मूल्यहीन, बिना अंत के, अस्तित्व में, तो ये केवल अमरत्व ही नही है, जो हमें चाहिए यदि जीवन अर्थपूर्ण हो, मूल्यवान और उद्देश के साथ हो, हमें परमेश्वर चाहिए/ और अमरत्व भी/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, और आपने कहा कि समस्या और भी बुरी होती गई क्योंकि परमेश्वर के बिना, उनके पास कोई तरीका ही नही था कि कहे कि क्या सही या गलत है/ कोई नैतिक मूल्य नही है/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: जी, परमेश्वर के बिना कोई स्थर ही नही है, सही और गलत का, भले और बुरे का/ सबकुछ सामजिक और पारंपरिक रूप में सही दिखाई देता है, और कोई भी नही है कि कहे कि किसके मूल्य सही हैं, और किसके गलत हैं, इस पूरी तरह से सही स्थर के बिना कि सही और गलत क्या है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: और ये आज हमारी परंपरा के बारे में बताता है, है ना?

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: मैं सच में नही सोचता जॉन कि परंपरा ही इससे जुडी हुई है, हालाँकि बहुत से लोग ऐसा सोचते हैं, मुझे लगता है कि ऐसा हुआ है कि कुछ बातों की सटीकता बदल दी गई हैं/ जैसे कि व्यक्तिगत स्थर का मूल्य बदल गया, सहते जाना और दूसरों के दृष्टिकोण को स्वीकार करते जाना, और ये उसके संबंध में दिखाई देता हो, लेकिन सच में ये नई सटीकता का लाया जाना है, जो इन दुसरे मूल्यों के बदले में पारंपारिक मूल्यों का इनकार करता है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: आप ने ये भी कहा है कि यदि परमेश्वर का अस्तित्व नही है, तो जीवन का कोई उद्देश नही है/ आपका क्या अर्थ है?

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: उद्देश से मेरा अर्थ लक्ष्य है, एक कारण जिसके लिए किसी का अस्तित्व है/ और यदि परमेश्वर का अस्तिव नही है तो मनुष्य के जीवन के लिए कोई उद्देश नही है, या इस संसार के लिए भी/ हम तो प्रकृति के अकस्मात उत्पादन हैं, जो अस्तित्व में लाए गए हैं बिना किसी कारण के, और अवश्य ही हम आगे नाश होने के लिए हैं, संसार की इस गर्मी से मृत्यु के लिए/ तो नास्तिकवाद में कोई कारण नही है, कोई उद्देश नही कि हम क्यों अस्तित्व में हैं, या संसार अस्तित्व में है/

मुझे याद है बचपन में मैंने एच जी वेल्स की नावेल पढ़ रहा था, नाम था टाइम मशीन, जिसने इसे बहुत अच्छी तरह बताया, इस नावेल में वेल्स, समय में भविष्य की यात्रा करते हैं कि मनुष्य की अंतिम मंजिल को खोज

सके, और उन्होंने ये पाया कि वो पहुचते हैं, एक बड़े लाल सूरज के पास, जहाँ जीवन नही, मनुष्य का अस्तित्व नही, संस्कृति नही, सब खत्म हो गया/

और जैसे मैं ऑय नावेल पढ़ी, मैंने सोचा नही, नही ये इ स तरह खत्म नही हो सकता/ लेकिन ये वस्तिकता है/ इस संसार की, परमेश्वर के बिना, कोई उद्देश नही है, ये इसी तरह खत्म होगा, पसंद हो या न हो/ तो इस कहानी में वेल्स टाइम ट्रायवलर वापस आता है, लेकिन क्यों, केवल पहले के समय में वही जो बिना उद्देश के जीवन के लिए भाग-दौड़ का हो/ याने सच में यदि परमेश्वर का अस्तित्व नही है, मनुष्य जाती खुदको पाती है, भयानक परिस्थिति में,जीवन तो निश्चय ही होगा बिना महत्व के, अर्थ और मूल्य या उद्देश के/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है, किसी नास्तिक ने दावा किया है कि अभी भी संभव है, कि मनुष्य अर्थपूर्ण और खुश जीवन, परमेश्वर के बिना/ और आप कहते हैं कि ये असंभव है, कि नास्तिक निरंतर और खुश जीवन जीए, अपने इस विचार से/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: जी, मैं सोचता हूँ कि ऐसा जीना असंभव होगा, दोनों याने निरंतर और ख़ुशी से, यदि हम विश्वास करते हैं कि जीवन तो बिना अर्थ, मूल्य और उद्देश का है/ केवल इसी तरह से नास्तिक ख़ुशी से जीने की कोशीश करते हैं, अनिश्चित रूप में जीने से, अपने दृष्टिकोण से, लेकिन यदि वो सच में निरंतर जीएगे, इस तरह कि उनके जीवन का कोई अर्थ नही, मूल्य नही, उद्देश नही है/ तो वो गहरी परेशानी में होगे, तो मैं सोचता हूँ कि ये मनुष्य के लिए ये बुनियादी मुश्किल है/ कि हम ऐसे संसार का दृष्टिकोण कैसे पाएगे, जो हमें निरंतर और ख़ुशी से जीने देगा? नास्तिकवाद ऐसे विचार नही देता है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: अब आपने बहुत से उदाहरण दिए हैं, आज के और भूतकाल के विख्यात नास्तिक के, जिन्होंने ये किया है, वो अनिश्चितता में जीते हैं/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: जी, उदहारण के लिए जीवन का अर्थ देखिए, यहाँ तक कि नास्तिक भी मानते हैं कि परमेश्वर के बिना, जीवन का कोई अर्थ नही होता, वो फिर भी जीते हैं, जैसे मानो उनका जीवन अर्थपूर्ण है/ उदहारण के लिए जॉन पॉल सार्ट ने कहा कि कोई अर्थ बना सकता है, अपने जीवन के लिए किसी तरह के काम को चुनने के द्वारा/ सार्ट ने खुद मार्क्स विचारधारा चुन ली/ लेकिन ये पूरी तरह अनिश्चित है/ संसार का सच में कोई अर्थ नही होता है, क्योंकि मैंने इसे ये दिया है/ मैं सोचता हूँ कि ये देखना आसान है, कहिए आप संसार को एक अर्थ दे और मैं दूसरा अर्थ देता हूँ, कौन सही है? खैर जवाब तो अवश्य ही कोई भी नही है/ संसार अपने

आप में बिना अर्थ का रहता है, इसके बिना कि हमने ऐसे इसे देखा है तो मैं सोचता हूँ कि सार्ट सच में ये कह रहे थे कि चलो दिखावा करो कि हमारे जीवन का अर्थ है/ और ये केवल खुद को मुर्ख बनाना है

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, ऐसा क्यों है कि जब हम मूल्यों की समस्या को देखते हैं, तो यही पर सबसे बड़ी गलतियाँ की जाती हैं/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: जी, मूल्यों का ही क्षेत्र है जहाँ निरंतर बहुत बड़ी गलतियाँ की जाती हैं, क्योंकि ये नास्तिक के लिए असंभव है कि ऐसा जीवन जीए कि कोई भी व्यवहारिक नैतिक मूल्य और काम नही रहे हैं, उदाहरण के लिए, फ्रीडरिच नीचज़े, 19 वी सदी के बड़े नास्तिक थे, इन्होने अपने मेंटर रिचर्ड वागनर के साथ लिखा, खासकर जर्मन कम्पोजर के एन्टी-सेमेटीजम पर और स्ट्रायडन्त जर्मन नैशलीजम पर, उसी तरह जॉन पॉल सार्ट, दुसरे विश्व-युद्ध के बाद में लिखते हैं, घोषित करते हैं कि ये विचारधारा जो यहूदी और दूसरे लोगों का कत्लेआम करना तो किसी तरह से किसी का चुनाव नही है, लेकिन ये सच में, उतना नैतिक रूप में गलत और स्वीकारणीय नही है/ बरटंड रासल ने माना कि वो निरंतर नही जी सकते हैं, अपने ही दृष्टिकोण से, वो सामजिक दोष निकालनेवाले विख्यात व्यक्ति हैं, युद्ध का इनकार करते और यौन आज़ादी का इनकार करते/रिचर्ड डॉकीन्स जैसे लोग भी, कट्टर नैतिकवादी थे,डॉकीन्स ने कहा, कि यदि परमेश्वर नही है तो भलाई नही, बुराई नही, कुछ नही, केवल दयनीय महत्वहिनता होगी/ कुछ भी हो उनकी किताबें तो भरी हैं, कट्टर नैतिक दोषों से, होमोसेक्स्च्युअल हरेसमेंट, बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने, और मनुष्य का बलिदान करने के विरोध से, ये सब अनिश्चित है, ये दिखाता है कि कोई भी ख़ुशी से नही रह सकता जैसे मानो नैतिक मूल्य और काम अस्तित्व में नही हैं/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, इसके बारे में भी बताइए, व्यवहारिक नैतिक मूल्यों के बारे में, जब कि नास्तिक कहते हैं कि उनके पास ये व्यवहारिक नैतिक मूल्य हैं, जो भी वो चुनाव करते हैं उसमे अनिश्चित होते हैं, और परमेश्वर के बिना जीने में बड़े परिणाम होते हैं,आप एक बार बी बी सी कॉमेन्ट्री देख रहे थे, होलोकोस्ट के बारे में, इसके बारे में बताइए/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: जी, इस बी बी सी डाक्यूमेंट्री में, उन्होंने इन्टरव्यू लिए ऑशस्वीथ में बचे हुए लोगों की/ और एक नर्स को जबरदस्ती ऑशस्वीथ में डॉक्टर बनाया गया, और उन्होंने बताया कि कैसे मैन्गले जो वहां डॉक्टर थे, उन्होंने कुछ गर्भवती स्त्रियों को एक बैरेक में इकट्ठा किया, ऐसा समय था कि इसने इन में से किसी

स्त्री को नही देखा, और वो पूछने लगी कि स्त्रियों को क्या हुआ? जो इस बैरेक में रहती थी, और जवाब था, ओ क्या आपने नही सुना, डॉक्टर मैनगले ने उनका उपयोग किया विविसेक्शन के लिए/ उसने उन्हें जिन्दा ही काट दिया, और यदि कोई व्याहारिक नैतिक मूल्य नही हैं, तो हम ऐसे कामों को गलत नही कह सकते हैं, एक रब्बी का इन्टरव्यू लिया गया जो ऑशस्वीथ में बंदी थे, ये तो मानो सारी नैतिकता की आज्ञाएँ उलटी कर डी गई थी, तू हत्या करना, तू झूठ बोलना,तू चोरी करना/ और मनुष्य जाती ने कभी ऐसे नरक को नही देखा था/ और फिर भी बिलकुल सही तरह से, यदि परमेश्वर का अस्तिव नही है तो हमारा संसार ऑशस्वीथ है, कोई भी भला और बुरा नही है/ कोई सही और गलत नही है/ ये तो केवल बिना मूल्य के अस्तिव की बात है/ और कोई भी नास्तिक निरंतर इस तरह के संसार के दृष्टिकोण के ढांचे में नही देखेगा/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, और मैने पाया कि ये अद्भुत है कि डॉक्टर एल डी रु ने प्रभावी बात कही थी, अमेरिकन अकैडमी फॉर द एडवांसमेंट ऑफ़ साइंस में सं 1991 में, शिफारिश की कि हम अच्छे झूठ पर विश्वास करते हैं/ इसके बारे में बताइए/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: जी, प्रोफेसर रु ने कहा था कि हम सामाजिक गडबडी को समाज पर राज्य नही करने दे सकते हैं, लेकिन दूसरी ओर परिपूर्णता की विचारधारा जो लोगों पर अपने नैतिक मूल्यों की जबरदस्ती करती हैं, वो भी काम नही करेगा/ तो हम कैसे इन बातों से बाहर आ सकते हैं, उन्होंने कहा हमें अच्छे झूठ की जरूरत है/ जिसके द्वारा बुद्धिमत्ता से बड़ी भीड़ को भरमाए, कि वो विश्वास करे कि हाँ व्यवहारिक नैतिक मूल्य हैं, व्यवहारिक अर्थ है, व्यवहारिक उद्देश हैं/ जब कि ये नही हैं/ इस तरह रु ने शिफारस की कि हम खुद को धोका देते जाए/ इस अच्छे झूठ के द्वारा, कि मनुष्य जाती और समाज सक्रिय होकर आगे जा सके, उनके अंतिम शब्द बहुत कुछ बताते थे, उन्होंने कहा कि ऐसे झूठ के बिना, हम जी नही सकते/ ये तो भयानक कथन है जो आधुनिक मनुष्य पर घोषित किए गए हैं/ निरंतर और खुशी से जीने के लिए वो खुद को धोका देने में जीते जाए/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, चलिए अच्छी खबर में चलते हैं, कैसे बाइबल की मसीहियत आधुनिक मनुष्य के इस संसारिक दृष्टिकोण को चुनौती देते हैं?

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: नास्तिकवाद के अविश्वसनीयता की ज्योति में, मुझे ऐसे लगता है जॉन, हमें पहली जगह पर वापस जाकर कहना होगा, रुकिए एक मिनट, हम कैसे जानते हैं कि परमेश्वर का अस्तित्व नही है? यदि परमेश्वर का अस्तित्व है, तो निश्चय ही जीवन में अर्थ, मूल्य और उद्देश के लिए एक बुनियाद है, इसलिए मैं

सोचता हूँ कि ये हमें प्रोत्साहित करे कि हम परखे और परमेश्वर के और मसीहियत के बारे में, नए सबूत और चर्चा को देखते जाए, क्योंकि यदि कोई अच्छा कारण है कि परमेश्वर का अस्तित्व है, तो ये हमें एक ढ़ाचा देता है, जिसमें हम निरंतर और ख़ुशी से जी सकते हैं/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, आपका कहना है कि बाइबल की मसीहियत दो मुख्य बातें देती हैं जो जरूरी हैं, अर्थपूर्ण, मूल्यवान और उद्देश के साथ जीवन के लिए/ परमेश्वर और अमरत्व, इसे समझाइए/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: ये बिलकुल सही है, जॉन, बाइबल की मसीहियत में परमेश्वर का अस्तित्व है, और जीवन कब्र पर खत्म नही होता है, जीवन का अर्थ तो पाया जाता है परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध में, जो सदा के लिए बना रहता है, अनन्तकाल में/ जीवन का मूल्य तो स्वयं परमेश्वर के स्वभाव में जड़ पकड़े होता है, वो तो स्वभाव से ही, प्रेमी, न्यायी, दयालू, उदार, विश्वासयोग्य है, और ये सब है, कि हम स्थिरता पाए नैतिक मूल्यों और कामों के बारे में, और अंत में जीवन के लिए व्यवहारिक उद्देश है, परमेश्वर ने हमें अपने लिए बनाया है, हमारा अंत तो परमेश्वर के ज्ञान में पाया जाना चाहिए/ यही तो मनुष्य के अस्तित्व की परिपूर्णता है/ कि परमेश्वर और उसके प्रेम को सदा के लिए जाने/ याने नास्तिकवाद के विरुद्ध में, बाइबल की मसीहियत जरूरी शतों को पूरी करती है, एक निरंतर और खुश जीवन के लिए/ परमेश्वर और अमरत्व, जो हमें अर्थ, मूल्य और उद्देश देता है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, ये आपके लिए अकादेमिक नही है, आप जो कह रहे हैं उसका अनुभव भी पाया है, उस समय के बारे में बताइए जब आप विश्वासी नही थे, और आपने इन बातों के बारे में सोचना शुरू किया/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: जी, मेरी परवरिश मसीही परिवार में नही हुई है, वो तो अच्छा और प्रेमी परिवार था/ लेकिन मैंने अनुभव किया है, वो व्याकुलता, और अंधकार, जिसके बारे में बताया और बाद में मैंने इसे पढ़ा फ्रेंच एक्ससीस्टंटलिस्ट फिलोसोफर से/ जैसे मैंने इसे देखा, जीवन और मेरा अपना अस्तित्व, तो सोचा कि मेरे अस्तित्व का क्या अर्थ है? मैं जानता था कि सब अंधकार में है, जो भी अस्तित्व में है, मैं देख सकता था, कोई अर्थ या उद्देश नही था, मेरे अस्तित्व और किसी के लिए भी/ और इसने मुझे भर दिया, बड़ी व्याकुलता और अंधकार से, और मुझे पता नही किया आप इसके फर्क को समझ सकते हैं या नही, लेकिन इसके कारण एक और दिन जीवन जीना बहुत मुश्किल होता है/

और मुझे याद है एक दिन, मुझे बहुत ही अजीब लग रहा था, मैं अपने हाय स्कुल जर्मन क्लास में गया, और मैं एक लडकी के पीछे बैठ गया, और ये इस तरह की थी कि हमेशा खुश होती थी, इससे मैं परेशान हो जाता था/ और मैंने उनके कंधों पर थपथपाते हुए कहा, "क्या बात है कि तुम हमेशा खुश रहती हो?" और उसने कहा,"क्योंकि मैं यीशु मसीह को अपने व्यक्तिगत उद्धार के रूप में जानती हूँ/" और मैंने कहा,"मैं भी चर्च में जाता हूँ" और उसके कहा, "ये काफी नही है, बील, वो तो सच में मेरे दिल में रहता है/" और मैंने कहा, "खैर, वो ये सब क्यों करना चाहता है?" और उसने कहा,"क्योंकि वो आप से प्यार करता है, बील?"

और उसने मुझ पर मानो भरी वार किया है, मैं इतना रोमांचित हुआ, मैं भर गया गया, व्याकुलता से और क्रोध से, और उसने कहा कि कोई है जो मुझ से प्रेम करता है, और ये कौन था, जगत का परमेश्वर, और इसने मुझे चौका दिया, कि ये सोचे कि जगत का परमेश्वर मुझ से प्रेम करे, इस कीड़े से जिसका नाम बील क्रेग है, जो धूल है, इस पृथ्वी नाम के ग्रह पर/

तो मैं उस शाम घर गया, और नया नियम उठाया, जो मुझे 5 वी क्लास में गिडियनस द्वारा दी गई थी, जब वो हमारे ग्रेड स्कुल में आए थे, और मैंने उसे पढना शुरू किया, जैसे मैंने सुसमाचार पढ़ा, मैं सच में यीशु नासरी के व्यक्तित्व से पूरी तरह रोमांचित हुआ/ यहाँ बुद्धि थी, इस व्यक्ति की शिक्षा में, जो मैं कभी नही देखा था, और उसके जीवन के बारे में, और उसके जीवन में अधिकार था जो सच में इनकार नही किया जा सकता है/

खैर आपको सारांश में बताऊ, कि अगले 6 महीने मैं बहुत ज्यादा और पीड़ादायी आत्मा की खोज में से होकर गया हूँ, फिर अंत में मैं मानो अपनी सारी बातों के अंत में आ गया, और एक रात मैं परमेश्वर को पुकार उठा, और मैं पुकार उठा उस सब क्रोध और कडवाहट के साथ जो मेरे अंदर था, और जैसे मैंने इसे किया तो मेरे अंदर ये अद्भुत और महान आनंद आया, जैसे कि मानो कोई गुब्बारा फुलाया जाता है, मानो मैं फूटने पर था, मैं बाहर चला गया, और ये गर्म मिड वेस्टर्न गर्मियों की शाम थी, और मैं मिल्की वे को क्षितिज से क्षितिज तक देख सकता था, जब मैंने तारों को देखा तो सोचा, "प्रभु, मैंने प्रभु को जाना है!" और उस पलने मेरे पुरे जीवन को बदल दिया, तब मैंने जाना कि मैं और कुछ नही कर सकता इस बाकी जीवन में बस ये सुसमाचार बाँटना होगा, सब लोगों को, क्योंकि यदि ये सत्य है, यदि ये सच में सत्य है तो ये सबसे बड़ी खबर है जो बताई चाहिए/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: दोस्तों यही सत्य है, और हम आशा करते हैं कि आप इस सीरिज में सुनते जाएगे, अगले हफ्ते हम चर्चा करेगे, 5 अच्छे कारण कि परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में विश्वास करे, आशा है कि आप हमारे साथ जुड़ जाएगे/

****

हमारे टीवी प्रोग्राम देखने के लिए मुफ्त में डाउनलोड कीजिए जॉन एन्करबर्ग ा ो एप

"घ्द्धठ्ठन्र् द्यद ठ्ठड़ड्डद्रद्य ख्ड्डद्मद्रद्म क्ण्द्धत्द्मद्य" ॠ ख्ॠद्मण्दृध्.दृद्धढ़

@JAshow.org

क्दृद्रघ्द्धत्ढ़ण्द्य 2015 ॠन्र्ड्ढक्ष्